फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 14)

Tamam Dinon Ka Sardar (Hindi)

तमाम दिनों का सरदार

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

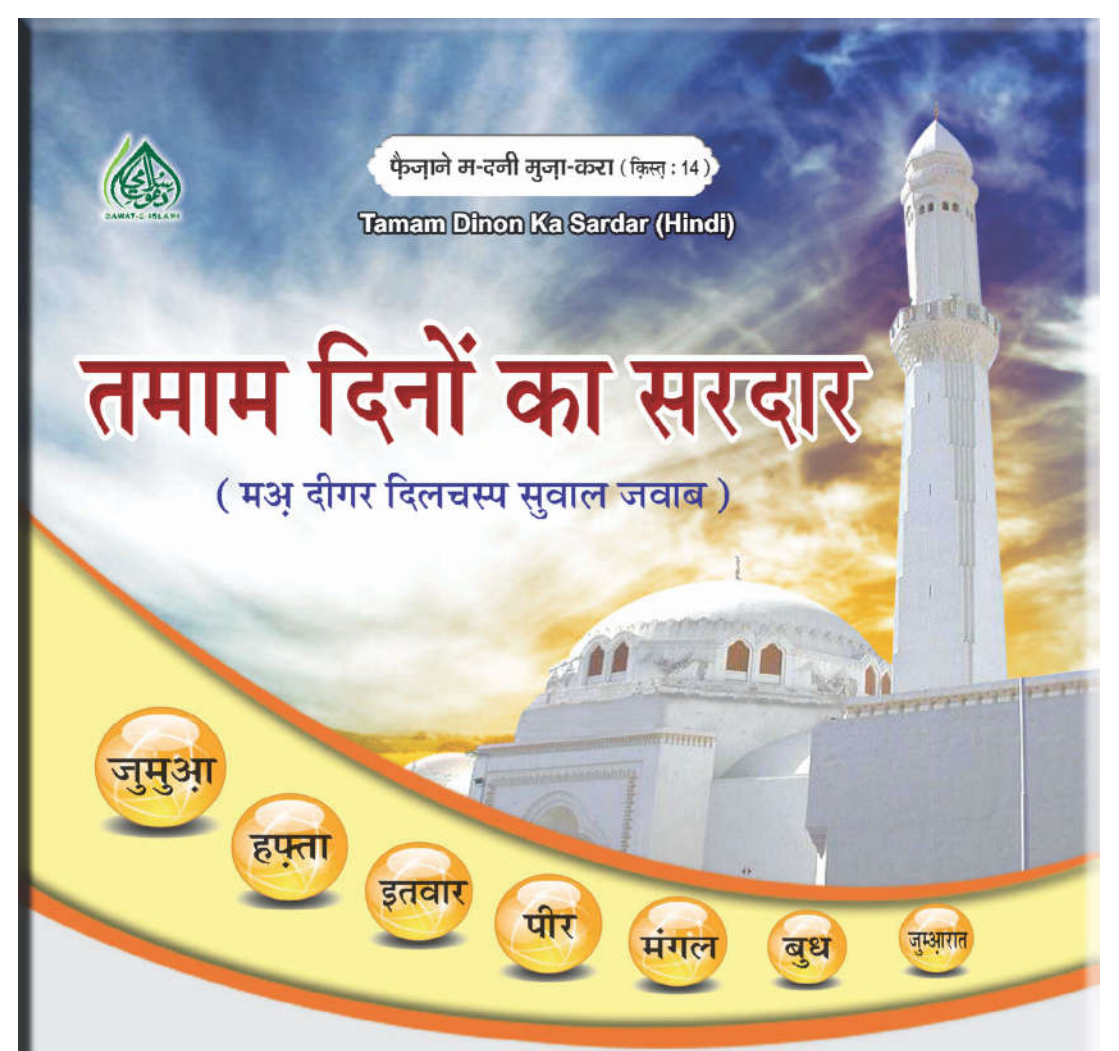

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

तमाम दिनों का सरदार

येह रिसाला (**तमाम दिनों का सरदार**)

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व तिब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
6 र-मज़ानुल मुबारक 1436 सि.हि./24 जून 2015 सि.ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

तमाम दिनों का सरदार

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़-लमिय्यान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : "बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जुमुअ़तुल मुबारक के फ़ज़ाइल

अ़र्ज़ : जुमुअ़तुल मुबारक के दिन के कुछ फ़ज़ाइल बयान फ़रमा दीजिये ताकि जुमुअ़तुल मुबारक की अ़ज़मत हमारे दिलों में मज़ीद उजागर हो जाए ?

(1) ..... ترمذی، کتاب الوتر، باب ما جاء فی فضل الصلاۃ... الخ، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴

इर्शाद : जुमुअ़तुल मुबारक के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जुमुआ़ के नाम की एक पूरी सूरत "**सू-रतुल जुमुअ़ह**" नाज़िल फ़रमाई है जो क़ुरआने करीम के अठ्ठाइस्वें पारे में जगमगा रही है। अह़ादीसे मुबा-रका में इस दिन के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुए हैं चुनान्चे सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जुमुआ़ का दिन तमाम दिनों का सरदार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **ईदुल अज़्ह़ा** और **ईदुल फ़ित्र** से बड़ा है, इस में पांच ख़स्लतें हैं : (1) **अल्लाह** तआ़ला ने इसी में आदम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को पैदा किया और (2) इसी में इन्हें ज़मीन पर उतारा और (3) इसी में इन्हें वफ़ात दी और (4) इस में एक साअ़त ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करेगा वोह उसे देगा जब तक ह़राम का सुवाल न करे और (5) इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी। कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता, आस्मान, ज़मीन, हवा, पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन से डरता न हो।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला किसी मुसल्मान को जुमुआ़ के दिन बे

مدینہ

1 ...... ابنِ ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب فی فضل الجمعۃ، ۲/۸، حدیث: ۱۰۸۴

मग़्फ़िरत किये न छोड़ेगा।[1]

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : जुमुआ़ के दिन और रात में चौबीस घन्टे हैं कोई ऐसा घन्टा नहीं जिस में **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम से छ[6] लाख आज़ाद न करता हो, जिन पर जहन्नम वाजिब हो गया था।[2]

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसल्मान जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात में मरेगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे फ़ित्नए क़ब्र से बचा लेगा।[3]

ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ (या'नी जुम्आ़रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) मरेगा अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस पर शहीदों की मोहर होगी।[4]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें जुमुअ़तुल मुबारक की

---

1 ..... مُعْجَمِ اَوْسَط، من اسمہ عبد المالک، ۳/۳۵۱، حدیث: ۴۸۱۷

2 ..... مُسْنَدِ اَبِی یَعْلٰی، مسند انس بن مالک، ۳/۲۱۹، حدیث: ۳۴۲۱

3 ..... تِرمِذی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی من مات یوم الجمعۃ، ۲/۳۳۹، حدیث: ۱۰۷۶

4 ..... حِلیۃ الْاَوْلِیاء، محمد بن المنکدر، ۳/۱۸۱، حدیث: ۳۶۲۹

ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। अफ़्सोस ! हम ना क़दरे इस मुबारक दिन को भी आ़म दिनों की त़रह ग़फ़्लत में गुज़ार देते हैं ह़ालां कि जुमुआ़ ईद का दिन है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे (या'नी जुमुआ़ को) मुसल्मानों के लिये ईद का दिन बनाया है तो जो शख़्स जुमुआ़ में आए ग़ुस्ल करे और जिस के पास ख़ुश्बू हो वोह ख़ुश्बू लगाए और मिस्वाक करे।(1) जुमुआ़ को बरोज़े क़ियामत रोशन व ह़सीन सूरत में उठाया जाएगा और अहले जन्नत दुल्हन की त़रह इस का घेरा किये होंगे।(2) जुमुआ़ के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुल्गाई जाती और इस के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। जुमुआ़ के रोज़ मरने वाला ख़ुश नसीब मुसल्मान शहीद का रुत्बा पाता है और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ हो जाता है।(3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस मुबारक दिन की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

जुमुआ़ के दिन नेकी का सवाब

अ़र्ज़ : क्या जुमुआ़ के दिन नेकियों का सवाब भी बढ़ा दिया जाता है ?

इर्शाद : जी हां। जुमुअ़तुल मुबारक के दिन नेकियों का अज्रो सवाब

مدینہ

(1) ......ابنِ ماجہ، کتاب إقامة الصلاة والسنة فیھا، باب ما جاء في الزینة یوم الجمعة، ۲/۱۶، حدیث: ۱۰۹۸

(2) ...... عمدةُ القاری، کتاب الأذان، باب فضل التأذین، تحت الحدیث: ۶۰۸، ۴/۱۵۹

(3) ......مرقاةُ المفاتیح، کتاب الصلاة، باب الجمعة، الفصل الثالث، تحت الحدیث: ۱۳۶۷، ۳/۴۶۱ ماخوذاً

बढ़ा दिया जाता है जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जुमुआ़ की एक नेकी सत्तर के बराबर होती है इसी लिये जुमुआ़ का ह़ज, ह़ज्जे अक्बर कहलाता है और इस का सवाब सत्तर ह़ज का (है) ।[1]

जुमुआ़ के दिन जहन्नम नहीं भड़काया जाता

अ़र्ज़ : क्या कोई ऐसा भी दिन है जिस दिन जहन्नम न भड़काया जाता हो ?

इर्शाद : जी हां । जुमुअ़तुल मुबारक के रोज़ जहन्नम नहीं भड़काया जाता जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : सिवाए रोज़े जुमुआ़ के जहन्नम (हर रोज़) भड़काया जाता है ।[2]

ख़ुत्बए जुमुआ़ के आदाब

अ़र्ज़ : ख़ुत्बए जुमुआ़ के कुछ आदाब बयान फ़रमा दीजिये नीज़ क्या निकाह़ का ख़ुत्बा सुनना भी ज़रूरी होता है ?

इर्शाद : जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं म-सलन खाना पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब ख़ुत्बे की ह़ालत में भी ह़राम हैं यहां तक कि अम्र बिल मा'रूफ़ (नेकी की दा'वत देना भी), हां

مدینہ

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 106

2 .....اَبو داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ یوم الجمعۃ قبل الزوال، ۱/۴۰۳، حدیث: ۱۰۸۳

ख़तीब अम्र बिल मा'रूफ़ कर सकता है। जब ख़ुत्बा पढ़े तो तमाम हाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना फ़र्ज़ है, जो लोग इमाम से दूर हों कि ख़ुत्बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना वाजिब है अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से ना जाइज़ है।(1)

रही बात निकाह़ का ख़ुत्बा सुनने की तो जिस त़रह़ और ख़ुत्बों का सुनना वाजिब है ऐसे ही निकाह़ का ख़ुत्बा सुनना भी वाजिब है चुनान्चे फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **दुर्रे मुख़्तार** में है : ख़ुत्बए जुमुआ़ के इलावा और ख़ुत्बों का सुनना भी वाजिब है म-सलन ख़ुत्बए ईदैन व निकाह़ वग़ैरा।(2)

क़ियामत जुमुआ़ के रोज़ क़ाइम होगी

अ़र्ज़ : क्या येह दुरुस्त है कि क़ियामत जुमुआ़ के रोज़ क़ाइम होगी ?

इर्शाद : जी हां। क़ियामत जुमुअ़तुल मुबारक के रोज़ क़ाइम होगी जैसा कि ह़दीसे पाक में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : क़ियामत जुमुआ़ ही के दिन क़ाइम होगी और कोई जानवर ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन सुब्ह़ के वक़्त सूरज तुलूअ़ होने तक क़ियामत के ख़ौफ़ से चीख़ता न हो, सिवाए आदमी और

مدینہ

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 774

2 ..... دُرِّمختار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی شروط وجوب الجمعۃ، ۳/۴۰

जिन्न के।[1] एक और ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : बेहतर दिन के आफ़्ताब ने इस पर तुलूअ़ किया, जुमुआ़ का दिन है, इसी में आदम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पैदा किये गए और इसी में जन्नत में दाख़िल किये गए और इसी में जन्नत से उतरने का इन्हें हुक्म हुवा और क़ियामत जुमुआ़ ही के दिन क़ाइम होगी।[2] एक रिवायत में इतना ज़ाइद है : इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी, कोई फ़िरिश्तए मुक़र्रब, आस्मान, ज़मीन, हवा, पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन से न डरता हो।[3]

इ़ल्म और उ़-लमा की अहम्मिय्यत

अ़र्ज़ : अक्सर देखा गया है कि आप उ़-लमाए किराम كَثَّرَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام का न सिर्फ़ ख़ुद अ-दबो एह़तिराम फ़रमाते हैं बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन दूसरों को भी इस की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं, इस बारे में कुछ म-दनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये ताकि इस की ज़रूरत व अहम्मिय्यत हम पर भी वाज़ेह़ हो जाए।

इर्शाद : इस्लाम में इ़ल्म और उ़-लमा की बड़ी अहम्मिय्यत है क्यूं कि इ़ल्मे दीन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मीरास है और उ़-लमाए दीन كَثَّرَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِین अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़ल्म के वारिस और जा नशीन हैं जैसा कि ख़ा-तमुन्नबिय्यीन,

---

1 ...... مؤطّا إمام مالک، کتاب الجمعة، باب ماجاء فی الساعة...الخ، ۱/۱۱۵-۱۱۲، حدیث: ۲۴۲

2 ...... مُسلِم، کتاب الجمعة، باب فضل یوم الجمعة، ص ۳۲۵، حدیث: ۸۵۴

3 ...... إبنِ ماجہ، کتاب إقامة الصلاة والسنة فیها، باب فی فضل الجمعة، ۲/۸، حدیث: ۱۰۸۴

साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : उ-लमा दुन्या के चराग़ और अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के जा नशीन हैं, मेरे और मुझ से पहले तमाम अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के वारिस हैं।[1] एक और ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : उ-लमा की इ़ज़्ज़त करो इस लिये कि वोह अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के वारिस हैं तो जिस ने इन की इ़ज़्ज़त की तह़क़ीक़ उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की इ़ज़्ज़त की।[2]

इ़ल्म व उ-लमा की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत का कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस्लामी अ़क़ाइदो इ़बादात की मा'रिफ़त, ह़लाल व ह़राम, जाइज़ व ना जाइज़, नेकी व बदी, सवाब व गुनाह में तमीज़, त़हारत, नमाज़, रोज़े, ज़कात और ह़ज की सह़ीह़ अदाएगी इसी इ़ल्म की बदौलत ह़ासिल होती है, इस के इ़लावा हर क़िस्म के मआ़शी व मुआ़-श-रती मुआ़-मलात की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा आ-वरी वग़ैरा सब इ़ल्मे दीन ही के सबब है, इसी इ़ल्म की ब-र-कत से हमारी मसाजिद आबाद हैं, अगर इ़ल्मे दीन के मदारिस व जामिआ़त ख़त्म कर दिये जाएं तो मुसल्मान कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद में मुब्तला हो जाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत का सह़ीह़ त़रीक़ा जो नबिय्ये करीम

مدینہ

1 ...... جامع صغیر، حرف العین، ص ۳۵۲، حدیث: ۵۷۰۳

2 ...... جامع الاحادیث، حرف الھمزۃ، ۲/۶۱، حدیث: ۳۸۹۰

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को ता'लीम फ़रमाया है वोह नहीं जान पाएंगे, ह़लाल व ह़राम, जाइज़ व ना जाइज़, नेकी व बदी से बिल्कुल ना वाक़िफ़ हो जाएंगे यहां तक कि मसाजिद वीरान हो जाएंगी और इस्लाम की रौनक़ ख़त्म हो जाएगी लिहाज़ा मुसल्मानों को मुसल्मान बाक़ी रखने और दीने इस्लाम की ता'लीमात से बहरा वर करने के लिये इ़ल्मे दीन की इतनी ही सख़्त ज़रूरत है जितनी सख़्त ज़रूरत ज़मीन की दुरुस्ती के लिये बारिश की होती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जैसे बारिश मुर्दा शह्र में ज़िन्दगी पैदा कर देती है ऐसे ही इ़ल्मे दीन मुर्दा दिल में ज़िन्दगी डाल देता है।[1]

येही वोह इ़ल्म है जिस के बारे में सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इ़ल्मे दीन इस्लाम की ज़िन्दगी और ईमान का सुतून है और जिस ने येह इ़ल्म सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये अज्र को मुकम्मल फ़रमा देगा और जिस ने येह इ़ल्म सीखा और इस पर अ़मल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह इ़ल्म भी सिखा देगा जो वोह नहीं जानता।[2] एक और ह़दीस में इर्शाद फ़रमाया : इ़ल्मे दीन मेरी मीरास है और जो मुझ से पहले अम्बिया गुज़रे हैं उन की मीरास है पस जो भी मेरा वारिस होगा, जन्नत में जाएगा।[3]

مدینہ

1 ..... فَتحُ الباری، کتاب العلم، باب فضل من علِم وعلّم، تحت الحدیث: ۷۹، ۱/۱۶۲

2 ..... جامع صغیر، فصل فی المحلی بأل من ھذا الحرف، ص ۳۵۲، حدیث: ۵۷۱۱

3 ..... مُسند الامام أبی حَنِیفَہ، باب الالف، روایتہ عن اسماعیل بن عبد الملک، ص ۵۷

इल्मे दीन की इन फ़ज़ीलतों और ब-र-कतों का हुसूल उ-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام के ज़रीए ही मुम्किन है, इन्ही की बदौलत हम इल्मे दीन हासिल कर के नफ़्सो शैतान के मक्रो फ़रेब से बचते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह्कामात पर अमल कर के अपनी क़ब्रो आख़िरत को संवार सकते हैं लिहाज़ा उ-लमाए अहले सुन्नत से हर दम वाबस्ता रहिये। काश ! येह म-दनी फूल हर दा'वते इस्लामी वाले की नस नस में रच बस जाए कि **"उ-लमा को हमारी नहीं बल्कि हमें उ-लमाए अहले सुन्नत की ज़रूरत है।"** येही वुजूहात हैं जिन की वज्ह से मैं न सिर्फ़ खुद उ-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام का अ-दबो एहतिराम करने की सआदत हासिल करता हूं बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन दूसरों को भी इस की तल्क़ीन करता रहता हूं। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आलिमे दीन हर मुसल्मान के हक़ में उमूमन और उस्तादे इल्मे दीन अपने शागिर्द के हक़ में खुसूसन नाइबे हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है।[1]

मुझ को ऐ अत्तार सुन्नी आलिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश)

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 638

उ-लमा को बुरा भला कहने वाले के बारे में हुक्म

अ़र्ज़ : उ-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام को बुरा भला कहने वाले के बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है ?

इर्शाद : उ-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام को बुरा भला कहने वाले के बारे में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अगर आ़लिम को इस लिये बुरा कहता है कि वोह आ़लिम है जब तो सरीह़ काफ़िर है और अगर ब वज्हे इ़ल्म इस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाइ़स बुरा कहता है, गाली देता तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़, फ़ाजिर है और अगर बे सबब (बिला वज्ह) रन्ज रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब ख़बीसुल बातिन (दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला) है और उस के कुफ़्र का अन्देशा है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى **तफ़्सीरे कबीर** में नक़्ल फ़रमाते हैं : जिस ने आ़लिमे दीन की तौहीन की, तह़क़ीक़ उस ने इ़ल्मे दीन की तौहीन की और जिस ने इ़ल्मे दीन की तौहीन की, तह़क़ीक़ उस ने नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की तौहीन की।[2] मज़ीद फ़रमाते हैं : जिस ने आ़लिम को ह़क़ीर समझा, उस ने अपने दीन को हलाक किया।[3]

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 129

2 ..... تفسیرِ کبیر، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۰، ۱/۴۰۸

3 ..... تفسیرِ کبیر، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۰، ۱/۴۱۱

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वोह उ़-लमाए अहले सुन्नत से अ़क़ीदतो महब्बत रखे और इन के साथ बुग़्ज़ो अ़दावत रखने से हर दम बचता रहे कि **ख़ुला-सतुल फ़तावा** में है : जो बिग़ैर किसी ज़ाहिरी वज्ह के आ़लिमे दीन से बुग़्ज़ रखे उस पर कुफ़्र का ख़ौफ़ है ।(1) इसी त़रह़ बिला इजाज़ते शर-ई इन के किरदार और अ़मल पर तन्क़ीद कर के ग़ीबत के गुनाहे कबीरा में न पड़े कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स अल कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : जिस ने किसी फ़क़ीह की ग़ीबत की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा, येह **अल्लाह** की रह़मत से मायूस है ।(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उ़-लमाए अहले सुन्नत का अ-दबो एह़तिराम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इन के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मालामाल फ़रमाए । (3)اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

❶...... خُلاصَۃُ الْفَتاوٰی، کتاب الفاظ الکفر، الفصل الثانی...الخ، الجنس الثامن، ۴/۳۸۸

❷...... مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب، الباب العشرون فی بیان الغیبۃ والنمیمۃ، ص۷۱

❸...... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उ़-लमाए अहले सुन्नत से बेह़द अ़क़ीदतो महब्बत रखते हैं और न सिर्फ़ ख़ुद इन की ता'ज़ीम करते हैं बल्कि अगर कोई आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने उ़-लमाए अहले सुन्नत के बारे में कोई ना ज़ैबा कलिमा कह दे तो इस पर सख़्त नाराज़ होते हैं । एक मौक़अ़ पर किसी ने टेलीफ़ोन पर बा'ज़ उ़-लमाए अहले सुन्नत के बारे में सख़्त ना ज़ैबा कलिमात कहे । इस पर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सख़्त नाराज़गी का इज़्हार करते हुए उसे तौबा करने की ताकीद की और आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रामीन से आगाह किया । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

कोई आ़लिम साहि़ब ग़ुस्से में आ कर झाड़ दें तो ?

अ़र्ज़ : अगर कोई आ़लिम साहि़ब ग़ुस्से में आ कर झाड़ दें तो क्या उन की बद अख़्लाक़ी की गिरिफ़्त न की जाए ?

इर्शाद : अगर कोई आ़लिम साहि़ब ग़ुस्से में आ कर झाड़ दें तो ऐसे मौक़अ़ पर उन की गिरिफ़्त करने के बजाए अपने ऊपर ग़ौर कर लीजिये हो सकता है कि आप की किसी कोताही की वज्ह से उन्हें ग़ुस्सा आया हो या वोह किसी वज्ह से परेशान हों और ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत ग़ुस्से में आ गए हों लिहाज़ा इल्मी मुआ़-मलात में इन के एह़सानात अपने ऊपर याद कर के दर गुज़र से काम लीजिये कि दर गुज़र करने की भी क्या ख़ूब फ़ज़ीलत है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जिस शख़्स ने क़ुदरत के बा वुजूद किसी को मुआ़फ़ किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे मुआ़फ़ फ़रमा देगा।[1] **इसी** त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अकाबिर सिद्दीक़ीन (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن) ने फ़रमाया : "या'नी हम भी बशर हैं बशर का ग़ुस्सा हमें भी आता है जब इसे देखो (या'नी जब हमें ग़ुस्से में

1 ..... مُعجَمِ کبیر، مکحول الشامی عن ابی أمامۃ، ۱۲۸/۸، حدیث: ۷۵۸۵

देखो) तो उस वक़्त हमें छेड़ो नहीं बल्कि अलग हट जाओ।" और बिलफ़र्ज़ येह भी न सही बल्कि बिला वज्ह महूज़ इस से कज खुल्क़ी (या'नी बद अख़्लाक़ी) की तो ज़रूर इस का इल्ज़ाम उस आ़लिम पर है मगर इसे उस की ख़ता गीरी (या'नी भूल निकालना) और उस पर ए'तिराज़ ह़राम है और इस के सबब रहनुमाए दीन से कनारा कश होना और इस्तिफ़ादए मसाइल (या'नी मसाइल सीखना) छोड़ देना इस के ह़क़ में ज़ह्र है उस का क्या नुक़्सान, ह़दीस में है नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आ़लिम अगर अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे जब (तो) उस की मिसाल शम्अ़ की है कि आप जले और तुम्हें रोशनी दे।" येह सब उस सूरत में है कि वोह आ़लिम ह़क़ीक़तन आ़लिमे दीन, सुन्नी सह़ीहुल अक़ीदा, हादिये राहे यक़ीन (सीधे रास्ते की त़रफ़ हिदायत करने वाला) हो वरना अगर सुन्नी नहीं तो कितना ही ख़लीक़ (या'नी अच्छे अख़्लाक़ वाला) कितना ही मु-तवाज़ेअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाला) कितना ही खुश मिज़ाज बने नाइबे इब्लीस है इस से कनारा कशी फ़र्ज़ है और इस से फ़तवा पूछना ह़राम।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि आ़लिमे दीन की किसी ख़ता की वज्ह से बद ज़न हो कर उस की सोह़बत से दूर नहीं होना चाहिये और न ही उस की मुख़ा-लफ़त करनी चाहिये कि येह उस के ह़क़ में ज़हरे क़ातिल है, येह भी मा'लूम हुवा कि आ़लिमे दीन के येह फ़ज़ाइल और इस की सोह़बत

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 711

की येह ब-र-कतें उसी सूरत में हैं जब कि वोह आ़लिमे दीन, सुन्नी, सह़ीहुल अ़क़ीदा हो, रहा बद मज़्हब आ़लिम का मुआ़-मला तो उस के साए से भी दूर भागना चाहिये कि उस की ता'ज़ीम ह़राम और उस की सोह़बत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है, शैत़ान भी बहुत बड़ा आ़लिम और मुअ़ल्लिमुल म-लकूत (या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताद) था मगर अब उ़-लमाए सूअ का सरदार है जिस से "اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ कर पनाह मांगी जाती है और "وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم" पढ़ कर इसे भगाया जाता है।

क्रिस्चेन के जनाज़े में शिर्कत करना

अ़र्ज़ : किसी के क्रिस्चेन दोस्त के वालिद का इन्तिक़ाल हो जाए तो क्या वोह उस के जनाज़े में जा सकता है या नहीं ?

इर्शाद : क्रिस्चेन बल्कि किसी भी काफ़िर से मुसल्मान को दोस्ती रखना मम्नूअ़ व ह़राम है चुनान्चे पारह 6 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 51 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَ النَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है बेशक **अल्लाह** बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता।

लिहाज़ा मुसल्मान को किसी भी काफ़िर से दोस्ती नहीं रखनी चाहिये कि येह ना जाइज़ व ह़राम है। अब रही बात जनाज़े में शिर्कत करने की तो अगर मरने वाला काफ़िर था तो उस के जनाज़े में शरीक नहीं हो सकते क्यूं कि क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है :

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ

(پ۱۰، التوبۃ:۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना न उस की क़ब्र पर खड़े होना।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ़ है। जिस शख़्स के मोमिन या काफ़िर होने में शुबा हो उस के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए। जब कोई काफ़िर मर जाए और उस का वली मुसल्मान हो तो उस को चाहिये कि ब त़रीक़े मस्नून ग़ुस्ल न दे बल्कि नजासत की त़रह़ उस पर पानी बहा दे और न कफ़ने मस्नून दे बल्कि उतने कपड़े में लपेट दे जिस से सित्र छुप जाए और न सुन्नत त़रीक़े पर दफ़्न करे और न ब त़रीक़े सुन्नत क़ब्र बनाए सिर्फ़ गढ़ा खोद कर दबा दे।[1]

इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला

1 ..... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 10, अत्तौबह, तह़्तल आयह : 84 मुल-त-क़त़न

ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : बेशक उस (ईसाई) के जनाज़े की नमाज़ और मुसल्मानों की त़रह़ उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन सब ह़रामे क़त़्ई थी। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖۚ﴾ (پ۱۰، التوبة: ۸۴) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना न उस की क़ब्र पर खड़े होना" मगर नमाज़ पढ़ने वाले अगर उस की नसरानियत पर मुत्त़लअ़ न थे और बर बिनाए इल्मे साबिक़ उसे मुसल्मान समझते थे, न उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़ तक उन के नज़्दीक उस शख़्स का नसरानी हो जाना साबित हुवा, तो इन अफ़्आ़ल में वोह अब भी मा'ज़ूर व बे क़ुसूर हैं कि जब उन की दानिस्त (समझ) में वोह मुसल्मान था उन पर येह अफ़्आ़ल बजा लाने ब ज़ो'मे ख़ुद शरअ़न लाज़िम थे, हां अगर येह भी उस की ईसाइय्यत से ख़बरदार थे फिर नमाज़ व तज्हीज़ो तक्फ़ीन के मुर-तकिब हुए क़त़्अ़न सख़्त गुनहगार और वबाले कबीर में गिरिफ़्तार हुए। अलबत्ता अगर साबित हो जाए कि उन्हों ने उसे नसरानी जान कर न सिर्फ़ ब वज्हे ह़माक़त व जहालत किसी ग़-रज़े दुन्यवी की निय्यत से बल्कि ख़ुद उसे ब वज्हे नसरानियत मुस्तह़िक़े ता'ज़ीम व क़ाबिले तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़े जनाज़ा तसव्वुर किया तो बेशक जिस जिस का ऐसा ख़याल होगा वोह सब भी काफ़िर व मुरतद हैं और

उन से वोही मुआ़-मला बरत्ना वाजिब जो मुरतद्दीन से बरता जाए और उन की शिर्कत किसी और त़रह़ रवा नहीं और शरीक व मुआ़विन सब गुनहगार ।[1]

काफ़िर को मर्हूम कहना कैसा ?

अ़र्ज़ : काफ़िर को मर्हूम कहना या मरने के बा'द उस के लिये बख़्शिश की दुआ़ करना कैसा है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 185 पर है : "जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़्फ़िरत की दुआ़ करे या किसी मुर्दा मुरतद को मर्हूम या मग़्फ़ूर कहे, वोह ख़ुद काफ़िर है ।" **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 228 पर है : काफ़िर के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत व फ़ातिह़ा ख़्वानी कुफ़्रे ख़ालिस व तक्ज़ीबे कुरआने अ़ज़ीम है ।

मस्बूक़ इमाम के साथ सलाम फेर दे तो ?

अ़र्ज़ : मस्बूक़ ने अपनी बक़िय्या रक्अ़तें पूरी करने के बजाए इमाम के साथ सलाम फेर दिया तो अब क्या करे ?

इर्शाद : दा'वते इस्लमी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त**

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 170 मुल-त-क़त़न

जिल्द अव्वल सफ़हा 716 पर है : मस्बूक़[1] को इमाम के साथ सलाम फेरना जाइज़ नहीं अगर क़स्दन फेरेगा नमाज़ जाती रहेगी और अगर सह्वन फेरा और सलाम इमाम के साथ मअ़न बिला वक़्फ़ा था तो इस पर सज्दए सह्व नहीं और अगर सलाम इमाम के कुछ भी बा'द फेरा तो खड़ा हो जाए अपनी नमाज़ पूरी कर के सज्दए सह्व करे ।

जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल होने वालों की ता'दाद

अ़र्ज़ : कितने अफ़राद बे हिसाब दाख़िले जन्नत होंगे ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़हा 71 पर है : "चार अरब नव्वे करोड़ की ता'दाद मा'लूम है, इस से बहुत ज़ाइद और हैं, जो **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़ल्म में हैं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया कि वोह मेरी उम्मत से 70 हज़ार अफ़राद को बिग़ैर हिसाब और अ़ज़ाब के जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, हर हज़ार के साथ 70 हज़ार और होंगे और मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की मुट्ठियों (जैसा कि उस के शायाने शान है) से तीन

1..... मस्बूक़ वोह है कि इमाम की बा'ज़ रक्अ़तें पढ़ने के बा'द शामिल हुवा और आख़िर तक शामिल रहा । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 588)

मुठ्ठियां (मज़ीद होंगे)।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होने वालों का सदक़ा हमें ईमान पर इस्तिक़ामत, सकरात में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत, क़ब्रो हश्र में राहत और अपनी रहमत से बे हिसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

सुन्नत की ता'रीफ़

अ़र्ज़ : सुन्नत किसे कहते हैं ?

इर्शाद : सुन्नत के लुग़वी मा'ना हैं त़रीक़ा और शरीअ़त की इस्तिलाह़ में "नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم के क़ौल, फ़े'ल और सुकूत[2] को सुन्नत कहते हैं और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अक़्वाल व अफ़्आ़ल पर भी सुन्नत का लफ़्ज़ बोला जाता है।[3]

---

1 ......مُسْنَدِ اِمام اَحمد، مسند الانصار، حدیث ابی امامة الباھلی...الخ، ۸/۳۰۲، حدیث: ۲۲۳۶۶

2 ...... किसी ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजू-दगी में कोई काम किया या बात कही और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे मन्अ़ नहीं फ़रमाया बल्कि सुकूत फ़रमा कर उसे मुक़र्रर रखा (तो उसे "सुन्नते तक़रीरी या सुकूत" कहा जाता है)।

(निसाबे उसूले ह़दीस मअ़ इफ़ादाते र-ज़विय्या, स. 27)

3 ......نُوْرُ الْاَنْوَار، ص۱۷۹

समुन्दर के किनारे नीकर पहन कर नहाना

अ़र्ज़ : समुन्दर के किनारे लोगों का नीकर पहन कर नहाना कैसा है ?

इर्शाद : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक औ़रत है या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं।[1] नीकर (KNICKER) पहन कर नहाने की सूरत में मुकम्मल घुटने बल्कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ रानों का कुछ हिस्सा भी खुला रहता है जिस से सख़्त बे पर्दगी होती है लिहाज़ा इस त़रह़ दूसरों के सामने अपनी रानें या घुटने खोलना गुनाह और दूसरों को इस त़रफ़ नज़र करना भी गुनाह है। मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि पैकरे शर्मो ह़या, मह़बूबे किब्रिया, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : न अपनी रान खोलो और न किसी ज़िन्दा (और) मुर्दा की रान देखो।[2]

इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी किसी के सामने रान न खोलो और न बिला ज़रूरत तन्हाई में खोलो रब तआ़ला से शर्म करो क्यूं कि रान सित्र है

مدینہ

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 481

2 .....ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی غسل المیت، ۲/ ۲۰۰-۲۰۱، حدیث: ۱۴۶۰

इस से आज कल के नीकर पहनने वाले भी इ़ब्रत पकड़ें जिन की आधी रानें खुली होती हैं और वोह बे तकल्लुफ़ लोगों में फिरते हैं **अल्लाह** तआ़ला ईमानी ग़ैरत नसीब करे ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि घुटने और रानें सित्र में दाख़िल हैं और "लोगों के सामने सित्र खोलना ह़राम है ।"(2) लिहाज़ा अगर कोई नीकर पहन कर नहाए तो दूसरे लोगों के लिये लाज़िम है कि उस के खुले हुए घुटनों और रानों को देखने से अपने आप को बचाएं ।

जहां बद निगाही होती हो वहां सैर के लिये जाना कैसा ?

अ़र्ज़ : क्या ऐसी जगह सैर के लिये जा सकते हैं जहां लोग नीकर पहन कर तैराकी या वर्ज़िश करते हों ?

इर्शाद : ऐसी जगह सैरो तफ़रीह़ के लिये हरगिज़ न जाया जाए जहां यक़ीनी तौ़र पर दूसरों के खुले सित्र पर नज़र पड़ने का अन्देशा हो म-सलन साह़िले समुन्दर और नह्र पर जहां लोग नीकर पहन कर नहाते हैं ऐसे ही पार्क या क्लब वग़ैरा में जहां लोग नीकर पहन कर दौड़ लगाते या वर्ज़िश करते हैं कि जिस त़रह़ "(बिला ह़ाजते शर-ई) किसी के सामने सित्र खोलना ह़राम

---

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 18

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 3, स. 302

है ।''[1] ऐसे ही बिला ज़रूरत किसी के सित्र को देखना भी फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ह़राम लिखा है ।[2] सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो देखने वाले पर और उस पर जिस की त़रफ़ देखा जाए ।[3] इस रिवायत से नीकर और चड्डी पहन कर नहाने, फ़ुटबॉल, कबड्डी वग़ैरा खेलने और इन का तमाशा देखने वाले भी इ़ब्रत ह़ासिल करें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें शर्मो ह़या का पैकर बनाए और अपने हर हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना लगाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करने का एक वस्वसा

अ़र्ज़ : अगर कोई इस्लामी भाई इस वज्ह से म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करता हो कि ''म-दनी क़ाफ़िले में हर बार वोही सुन्नतें और दुआ़एं सिखाई जाती हैं'' तो क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : म-दनी क़ाफ़िले में बार बार वोही सुन्नतें और दुआ़एं सिखाई जाती हैं इस वज्ह से म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करना वस्वसए शैत़ानी और दा'वते इस्लामी के म-दनी मक़्सद से ना वाक़िफ़ होने का नतीजा है । तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

مدینہ

1 ..... هداية، كتاب الشهادات، باب من تقبل شهادته ومن لا تقبل، ۳/۱۲۳

2 ..... اَلاِخْتِيار لِتعليلِ المُختار، كتاب الكراهية، ۴/۱۶۳ ماخوذاً

3 ..... شُعَبُ الاِيمان، باب الحياء، فصل فى الحمام، ۶/۱۶۲، حديث: ۷۷۸۸

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का म-दनी मक़्सद "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करना है।" अगर इस म-दनी मक़्सद पर ग़ौर कर लिया जाए तो येह शैत़ानी वस्वसा तारे अ़न्कबूत (या'नी मकड़ी के जाले) से भी ज़ियादा कमज़ोर नज़र आएगा क्यूं कि इस म-दनी मक़्सद में अपनी इस्लाह़ के साथ साथ सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश भी शामिल है।

पहली बात तो येह है कि कोई भी शख़्स येह दा'वा नहीं कर सकता कि इस की कमा ह़क़्क़ुहू इस्लाह़ हो चुकी है अब मज़ीद इसे इस्लाह़ की ह़ाजत नहीं, जब ऐसा नहीं तो फिर येह वस्वसा कैसा ? अगर बिलफ़र्ज़ किसी को सुन्नतें और दुआ़एं याद हैं और वोह इन पर अ़मल पैरा भी है तो बहुत अच्छी बात है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस में मज़ीद ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए मगर येह सोच कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करना कि मुझे तो तमाम ज़रूरी मसाइल, सुन्नतें और दुआ़एं वग़ैरा आती हैं, मह्ज़ ख़ुश फ़ह्मी या ग़लत़ फ़ह्मी का नतीजा भी हो सकता है कि बसा अवक़ात बन्दा येह ख़याल करता है कि मैं अ़र्सए दराज़ से येह दुआ़एं पढ़ रहा हूं, सुन्नतों पर अ़मल कर रहा हूं, मुझे तो येह सारी चीज़ें अज़बर हैं मगर जब कोई दूसरा सुन ले या पूछ ले तो बताने में ग़-लत़ी कर जाते हैं या बता ही नहीं पाते, इस बात का अन्दाज़ा म-दनी क़ाफ़िले ही की इस म-दनी बहार से लगा

लीजिये चुनान्चे "एक मर्तबा नेवी के एक अफ़्सर ने आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की सआ़दत ह़ासिल की। दौराने सफ़र इस्लाह़ की निय्यत से दुआ़ए क़ुनूत सुनी गई तो उन्हों ने बहुत सख़्त ग़-लती की। जब इस्लामी भाई ने उन की इस्लाह़ की तो कहने लगे : इस म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से मुझे अपनी ग़-लती का पता चला है, मैं तो आज तक इसी त़रह़ पढ़ता आ रहा हूं।"

दूसरी बात येह है कि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने का मक़्सद चूंकि अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरे लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करना भी है। ज़रा आप अपने से पूछिये ! क्या आप ने सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ कर ली है ? क्या आप को जो दुआ़एं, सुन्नतें और दीनी मसाइल याद हैं सब को सिखा दिये हैं ? यक़ीनन आप का जवाब नफ़ी में होगा लिहाज़ा सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के ही हम अपने इस अ़ज़ीम म-दनी मक़्सद में काम्याबी ह़ासिल कर सकते हैं। अगर आप को येह सुन्नतें और दुआ़एं याद हैं तो क्या इन्हें दोबारा दोहराने नीज़ किसी और को सिखाने की भी ह़ाजत नहीं ? क्या इन्हें दोहराने और दूसरों को सिखाने पर सवाब नहीं मिलेगा ? जब सवाब मिलता है और यक़ीनन मिलता है और दूसरों को सिखाने की

ह़ाजत भी है तो फिर येह बोरियत और वस्वसे कैसे ? दर्से निज़ामी पढ़ाने वाले असातिज़ा सालहा साल से एक ही किताब पढ़ा रहे होते हैं वोह बोरियत महसूस नहीं करते तो आप म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और बार बार सीखी हुई बातें दोहराने और दूसरों को सिखाने से बोरियत क्यूं महसूस करते हैं ? याद रखिये ! एक बार कोई चीज़ सीख कर याद कर लेने से उस का सवाब ख़त्म नहीं हो जाता बल्कि दूसरों को सिखाने और फिर उन के अ़मल करने से वोह अ़मल सवाबे जारिया का ज़रीआ़ बन जाता है। फिर येह भी ज़ेह्न नशीन रहे कि म-दनी क़ाफ़िले में फ़क़त़ सुन्नतें और दुआ़एं ही नहीं सीखी और सिखाई जातीं बल्कि और बहुत सारी चीज़ें हैं जो म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की बदौलत ह़ासिल होती हैं म-सलन राहे ख़ुदा में सफ़र करने के फ़ज़ाइल, राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने का अज्रो सवाब, इल्मे दीन सीखने और सिखाने के फ़ज़ाइल, नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने का एहतिमाम, नवाफ़िल की अदाएगी और तिलावते क़ुरआन अल ग़रज़ बहुत से नेक काम करने का मौक़अ़ मिलता है। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शैत़ान इन्सान का खुला दुश्मन है वोह कभी भी नहीं चाहता कि कोई मुसल्मान अपनी और दूसरे लोगों की इस्लाह़ कर के सवाब कमाने और अपनी आख़िरत बेहतर बनाने में कम्याब हो इस लिये वोह मुख़्तलिफ़

अन्दाज़ में त़रह़ त़रह़ के वसाविस में मुब्तला कर के इस अ़ज़ीम सआ़दत से रोकने की भरपूर कोशिश करता है लिहाज़ा आप शैत़ानी वसाविस की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दीजिये बल्कि शैत़ान के तमाम ह़र्बों और चालों को नाकाम बनाते हुए जद्वल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी में यक-मुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़्सो शैत़ान के हथकन्डों से बचने और अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ख़ुशदिली के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार

(वसाइले बख़्शिश)

ماخذومراجع

❋	قرآنِ پاک	کلام الٰہی	❋ ❋ ❋ ❋
	نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
2	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
3	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن الحسین رازی شافعی، متوفّٰی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
4	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
5	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
6	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
7	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ، متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
8	مسند الامام ابی حنیفہ	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصفہانی، متوفّٰی ۴۳۰ھ	مکتبۃ الکوثر الریاض ۱۴۱۵ھ
9	مُسندِ امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
10	مُوَطّا امام مالِک	امام مالک بن انس، متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
11	المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
12	المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
13	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
14	مسند ابی یعلیٰ	شیخ الاسلام ابو یعلیٰ احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
15	جامع صغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ

16	جامع الاحادیث	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
17	عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفّٰی ۸۵۵ھ	مدینۃ الاولیا ملتان
18	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
19	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
20	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
21	نصابِ اصولِ حدیث	مجلس المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
22	حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصفہانی الشافعی، متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
23	الہدایۃ	امام برہان الدین علی بن ابی بکر مرغینانی، متوفّٰی ۵۹۳ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
24	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
25	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
26	خلاصۃ الفتاویٰ	علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری، متوفّٰی ۵۴۲ھ	کوئٹہ
27	الاختیار	امام عبد اللہ بن محمود الحنفی، متوفّٰی ۶۸۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
28	نور الانوار	شیخ احمد المعروف بہ ملا جیون الحنفی، متوفّٰی ۶۸۳ھ	مدینۃ الاولیا ملتان
29	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
30	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
31	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت

❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	क्रिस्चेन के जनाज़े में शिर्कत करना	16
जुमुअ़तुल मुबारक के फ़ज़ाइल	1	काफ़िर को मर्हूम कहना कैसा ?	19
जुमुआ़ के दिन नेकी का सवाब	5	मस्बूक़ इमाम के साथ सलाम फेर दे तो ?	19
जुमुआ़ के दिन जहन्नम नहीं भड़काया जाता	6	जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल होने वालों की ता'दाद	20
ख़ुत्बए जुमुआ़ के आदाब	6	सुन्नत की ता'रीफ़	21
क़ियामत जुमुआ़ के रोज़ क़ाइम होगी	7	समुन्दर के किनारे नीकर पहन कर नहाना	22
इ़ल्म और उ़-लमा की अहम्मिय्यत	8	जहां बद निगाही होती हो वहां सैर के लिये जाना कैसा ?	23
उ़-लमा को बुरा भला कहने वाले के बारे में हुक्म	12	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करने का एक वस्वसा	24
कोई आ़लिम साहिब गुस्से में आ कर झाड़ दें तो ?	14	मआख़िज़ो मराजेअ़	29

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुम्अ़रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये **''म-दनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''म-दनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net